

श्री श्रीभास चन्द्र सुपकार

Shri Sribhas Chandra Supakar



पद्म श्री

Padma Shri



राष्ट्रपति से अलंकरण प्राप्त करते हुए

Receiving the decoration from the President

श्री श्रीभास चन्द्र सुपकार

श्री श्रीभास चन्द्र सुपकार एक प्रख्यात पेशेवर वस्त्र डिजाइनर हैं। आपने वस्त्र डिजाइनिंग के क्षेत्र में तथा कुछेक बहुत ही समृद्धशाली एवं लगभग लुप्तप्राय परंपरागत बुनाई तकनीकों के पुनःद्धार एवं उन्हें समकालिक बनाने में सराहनीय कार्य किया है।

2. आपका जन्म 23 सितम्बर, 1965 को हुआ। आपने वर्ष 1985 में भारतीय हथकरघा प्रौद्योगिकी संस्थान, वाराणसी से हथकरघा प्रौद्योगिकी में डिप्लोमा प्राप्त किया। वर्ष 1985–86 में वस्त्र डिजाइनिंग में प्रशिक्षित होने के बाद आपने अपने पिता की छत्रछाया के तहत वर्ष 1993 तक कार्य किया और प्रशिक्षण दिया, साथ ही उत्तर प्रदेश राज्य हथकरघा कारपोरेशन में सहायक प्रबंधक, डिजाइनर के रूप में भी कार्य किया। तदुपरांत, आपने इस उद्योग में स्वतंत्र वस्त्र डिजाइनर के रूप में कार्य करना आरंभ किया।

3. आपने स्वयं को हथकरघा उद्योग के विकास के लिए समर्पित कर दिया। आपने अवध जामदानी के पुनरूद्धार के लिए असाधारण प्रयास किए और एक अनोखे बड़े आकार में शिकारगाह जंगला की पारंपरिक ड्राइंग के विस्तार को अभिकल्पित किया जो वाराणसी हथकरघा के इतिहास में कभी नहीं बनाया गया। आपने गेठुआ, नाम की एक तकनीक को पुनर्जीवित किया, जो परंपरागत बनारसी जरी में अपनी पहचान चार–पांच दशकों से खो चुकी थी और जो अन्यत्र कहीं नहीं पायी जाती है। आपने, सदियों से विकसित समृद्धशाली परंपराओं को बनाए रखते हुए कई एक बुनकरों को प्रशिक्षित करने के साथ–साथ उन्हें नई प्रवत्तियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते हुए वाराणसी में बुनाई के मानकों को उन्नत करने में भी योगदान किया। उनमें से कई एक को राज्य और राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर पुरस्कारों से विभूषित किया गया है।

4. आपने कई एक सरकारी हथकरघा परियोजनाओं को मार्ग दर्शन प्रदान किया और सुविधा संपन्न बनाया, हथकरघा उत्पादन के लिए विदेश मूल के डिजाइनरों को प्रशिक्षित किया और सिल्क ब्रोकेड, नकुशा बंध एंड सारीज ऑव इंडिया नामक पुस्तक के लेखकों का मार्गदर्शन भी किया। वर्ष 2009 में एलायँस फ्रैंचाइजी, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली में वस्त्र मंत्रालय तथा फ्रांस के दूतावास की सहायता से वाराणसी–हथकरघा की मौजूदा एवं लुप्त हो चुकी तकनीकों के परंपरागत वस्त्रों पर आधारित 'काशी कलीडोस्केप' नामक प्रदर्शनी का शानदार सफलता के साथ आयोजन किया गया था। आपको वस्त्र मंत्रालय के तहत् अखिल भारतीय हथकरघा बोर्ड और राष्ट्रीय वस्त्र डिजाइन केन्द्र द्वारा गठित समिति के एक सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया।

5. आपको वस्त्र डिजाइनिंग के लिए वर्ष 1995 का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। कई एक पत्रिकाओं और समाचार पत्रों जैसे – बिजनेस इंडिया, डिस्कवर इंडिया, एले, टाइम्स ऑव इंडिया, स्टेट्समैन, द हिन्दू, एशियन एजेज, इंडिया टुडे, डेक्कन क्रोनिकल एवं दैनिक जागरण आदि ने आपके कार्य के बारे में भिन्न–भिन्न वर्षों में आपका साक्षात्कार भी लिया।

Shri Sribhas Chandra Supakar

Shri Sribhas Chandra Supakar is an eminent professional textile designer, who has made commendable contributions in the field of textile designing and in the revival and contemporisation of some very rich and almost forgotten traditional weaving techniques.

2. Born on September 23, 1965 Shri Supakar received his diploma of handloom technology from Indian Institute of Handloom Technology, Varanasi in 1985. Trained in textile designing in 1985-86 under the umbrella of his father, he worked and trained up to year 1993 and also acted as Astt. Manager Designs in UP State Handloom Corporation. Later he started as a freelance textile designer in industry.

3. Shri Supakar devoted himself for the upliftment of handloom industry. He made extra ordinary effort in the revival of Awadh Jamdani and designed a spread of traditional drawing shikargah jangla in unique big size which was never made in the history of Varanasi-handloom. He revived gethua, a weaving technique which had lost his identity since four–five decades in traditional banarasi brocade and is not found anywhere else. He also contributed in raising the standards of weaving in the Varanasi region by training many weavers and encouraging them to adapt to new trends while maintaining richness traditions developed over centuries. Most of them have been felicitated with awards of both state and national level.

4. Shri Supakar guided and facilitated several government handloom projects, trained foreign based designers for handloom production and also guided the authors of the book named Silk Brocade, Naqusha Bandh and Sarees of India. A grand successful exhibition based on traditional textiles of present and lost techniques of Varanasi-handloom named Kashi-kaleidoscope, supported by Ministry of Textiles and Embassy of France was held in year 2009 at alliance franchise, Lodhi Estate, New Delhi. He was nominated as the member of All India Handloom Board under the Ministry of Textile and as a member of committee constituted by national center of textile design.

5. Shri Supakar is the recipient of national award for the year 1995 for textile designing. Several magazines and newspapers like Buisness India, Discover India, Elle, Times of India, Statesman, The Hindu, Asian Ages, India Today, Deccan Chronicle and Daink Jagaran etc. interviewed Shri Supakar in several years regarding his work.